परमात्माजयति ।

# सिखों की अरदास

श्रीयुत पं० तिलकराम जी लूनानिवासी

उपदेशक महामंडल भारतधर्म

## सङ्कलित

लक्ष्मीनारायण छापाखाना

मुरादाबाद में छपवाया.

# सिखों की अरदास।
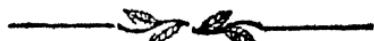
## श्रीभगउती जी सहाइ वार श्रीभगउती जी की पातिशाही ॥ १० ॥

प्रिथम भगउती सिमर कै गुरुनानक लइ धिआइ।
फिर अंगद गुरुते अमरदास रामदासै होई सहाइ ॥
अरजन हरगोविंद नू सिमरौं श्रीहरिराइ।
श्रीहरिकृष्ण धिआईऐ जिसु डिठ्ठे सभदुख जाइ ॥
तेगबहादुर सिमरीऐ घर नउ निध आवै धाइ।
सभ थांई होइ सहाइ ॥

यह शब्द श्रीमुख वाक गुरू गोविंदसिंह जी का है हमने दशम ग्रंथ साहिब से अक्षर अक्षर शास्त्री अक्षरों में सनातन धर्मियों के देखने वास्ते नकल कियाहै अपनी ओर से एक मात्रा का भी भेद नहीं किया जो चाहे मिला ले। जब सिख लोग ग्रंथ साहिब को कुनका आदि किसी चीज का भोग लगाते हैं अथवा जब कोई सिख कुछ भेट लेकर गुर

दुवार आदि में जाता है तो सब जगह यही शब्द भाई जी उच्चारण करते हैं इसके वदून कोई चीज मंजूर नहीं होती इसको संकल्प की जगह समझना चाहिये उनकी बोली में इसको अरदास या हरदास कहते हैं शास्त्री फारसी में इसके कुछ अर्थ नहीं होसक्ते यह केवल सिखों का संकेत है इससे हमको कुछ प्रयोजन नहीं कुछ ही हो हमतो यह दिखलाते हैं कि इस में केवल गुरू गोविंदसिंह जी ने यह दिखलाया है कि सब गुरूओं ने भगवती को पूजा है और उससे सहायता ली है और उसने सब जगह उन की रक्षा की है और इसमें सिखों को यह जतलाते हैं कि तुम भी भगवती की इसी तरां पूजा करो तुमपर भी कृपा करेगी इसी वास्ते जव कोई सिख भेट लाता है तो यह शब्द उच्चारण होता है और भगवती की महिमा सुनाई जाती है प्राचीन सब सिख इसको मानते और जानते थे अब कुछ सिख जो अपने को तत्वखालसा की पदवी देते हैं भगवती के बड़े विरोधी होरहे हैं न केवल विरोध ही है अत्यंत कठोर कड़े बाक्य कहते हैं जो किसी विरोधी को भी कहने योग्य नहीं सनातनधर्मी ईंट का जवाब पत्थर देकर उनके गुरुओं को कुछ नहीं कहते बड़ाई से ही याद करते हैं क्योंकि गुरू

महाराजों का इसमें कुछ दोष नहीं वह सब देवी देवतों के अत्यंत भक्त गुज़रे हैं आद ग्रंथ साहिब में रामनाम के सिवाय कुछ नहीं लिखा सब परमेश्वर के भजन और राम नाम की महिमा आदि से पुर है गुरू नानक जी ने अपनी अधीनता भक्ति अत्यंत वर्णन की है इसी तरां दशम ग्रंथ साहिब में गुरु गोबिंदसिंह जी ने भगवती की स्तुती विशेष करके और और अवतारों की कुछ थोडी वर्णन की है अर्थात् धर्म विरुद्ध कोई अक्षर नहीं परन्तु यह कलियुगी सिखों का दोष है जो गुरुसाहिबों से बिरुद्ध राह चलकर देवी देवतों की झूठी निंदा करते हैं सो इसका फल एकदिन यह होगा कि कोई अवधूत सनातनधर्मी गुरुसाहिबों की बेअदबी करबैठेगा अब हम उक्त शब्द के अर्थ करते हैं।

मूल–प्रथम भगउती सिमरकै, गुरुनानक लई धिआइ।

अर्थ भगउती अपभ्रंश भगवती का है गुरुजी अपनी रचना फारसी अक्षरों में लिखा करते थे।

फारसीमें। भगवती। भगउती। की एकही सूरत होती है केवल अक्षरोंको देखकर कोई कुछ वांचलेवे यदि वाओ अर्थात् य र ल व वाले वकार पर (ज़बर) अर्द्ध अकार दियाजावे तो भगवती। पढाजाता है यदि उसी वकार को (साकिन) स्वर

रहित रक्खाजावे तो—(भगौती ) होजाता है इसमें और प्रमाणभी है। कि फारसी की न्यांई भकार गकार उकार को जुदा जुदा लिखते हैं जैसे (भगउती) यदि गुरू साहिव भगौती लिखते तो ( भगौती ) लिखते उकार को भकार से भिन्न लिखने की क्या आवश्यकता थी गुरमुखी में सव स्वर अक्षरों के साथ मिलकर लिखेजातेहैं इसका यही कारण प्रतीत होता है कि गुरू साहिव ने फारसी अक्षरों में यह शव्द लिखा था गुरमुखीवालेभाईजीने उसी मकारमक्खी गैलमक्खी मारदी ती शब्द के उच्चारण की ओर ध्यान न दिया न किसी फारसी वाले से पूछा फारसीमें वा़ओ दोकाम देताहै य र ल व़ वा़ले व़कार की जगह भी लिखते हैं और ओकार औकार की जगह भी लाते हैं फारसी अरवी में शास्त्री गुरमुखी की सदृश स्वर अक्षरों के साथ नहीं लिखेजाते नीचे ऊपर जुदे लिखतेहैं अलिफ। व़ाओ। या। फारसीमें अक्षरोंके साथ जरूर मिलजातेहैं परन्तुपिछले दोस्वर कभी य,र,ल,व़ वाले व़कार। यकार का काम देते हैं कभी उकार इकार होजाते हैं। इसीवास्ते अरवी फारसी में शव्दका उच्चारण अक्षरों से शुद्ध नहीं होसक्ता या तो ( लुग़ात ) कोष देखना पडता है या उस्ताद से सुनाजाता है यही कारण भगवती से भगउती

होने का है प्राचीन ज्ञानी भाई जी इसबातको खूब जानते थे नवीन खालसा का अभिप्राय जो औरही होरहाहै उन्हों ने इस भेद को अपनेवास्ते प्रमाण करलिया और कहते हैं कि यदि गुरुसाहिब का आशय भगवती लिखने का था तो भगउती क्यों लिखी क्या भगवती लिखने नहीं जानते थे इसका कारण हम ऊपर लिखचुके हैं और यह भी जानतेहैं परंतु मूर्ख लोगों को फसाने वास्ते यह हीला घड़ लियाहै और अंगरेज़ी वाले कुछ तो इसवात से वाक़िफ़ नहीं जो जानते हैं वोह दानिस्ता अपना झंडा जुदा खड़ाकरते हैं वास्तव में । भगवती । भगउती । में भेद नहीं । एकही शब्द हैं नवीन पंथी भगौती सिद्ध करके उसका अर्थ खंडा या तलवार आदि शस्त्र का लेते हैं बड़ा आश्चर्य्य है गुरुसाहिवों ने देवी का तो ध्यान स्मरण नहीं किया तलवार या खंडे का ध्यान किया है जो लोहमय वस्तु है स्मरण ध्यान चेतन पदार्थ का होता है अथवा जड का भाई जी स्मरण ध्यान देवतों का होता है जो अपनी कला शक्ति से भिक्षु के अभिप्राय को जानकर उसकी आशा पूर्ण करते हैं गुरु साहिवों के स्मरण ध्यान की खवर खंडे तलवार को क्या होगई थी सच कहिये फेर उन्होंने क्या मददकरी

थी शायद इसवक्त के नवीन सिख खंडे तलवार के सिवाय गुरु महाराजों का ध्यान नहीं करते खंडे ही को सर्व शक्तिमान जानते हैं वास्तव में शस्त्र कुछ नहीं करसकता जिस के हाथ में होता है वही सब कुछ करता है नहीं तो हीजड़ों को भी जंगमें भरती करना चाहिये क्योंकि जब उन के हाथ में शस्त्र है वोही सव कुछ करेगा बहादर बे बहादर की कुछ बड़ाई छुटाई नहीं शोककी वार्ता है हिंदुओं को मूर्खता से वुत परस्त बतलाकर मुंह बनाते हैं और आप अव कहते हैं गुरु नानक साहिव से लेकर गुरु तेग बहादर तक सबने खंडे का स्मरण ध्यान किया है भाईजी गुरुओं को जब आप परमेश्वर का अवतार मानते हैं तो उन्हों ने खंडे का ध्यान कैसे किया है इस अर्थ बदलने पर बडे दोष आते हैं संक्षेप से लिखेगये—कुछ होशकरो यादि गुरु साहिवों को शस्त्र के स्मरण ध्यान की ज़रूरतथी तो वंदूक तोप का ध्यान अच्छाथा जो सवसे बडा शस्त्र है और यह भी बातहै कि शस्त्रकी जरूरत गुरु गोविन्द सिंह को हुई थी पिछले नौ गुरु साधूवृत्ति में रहे थे उनको खंडेकी क्या जरूरतथी जो उसकी पूजा करी है यह सब वनावटी वातोंसे सिखोंकी पोल खोलीगई है अब शब्द के अर्थ लिखते हैं ( स्मरण ) याद करना

( ध्यायन ) एक तरफ मन लगाना अर्थात् पहिले गुरू नानक साहिव ने भगवती का स्मरण करके एकचित्त होकर भगवती के चरणों में ध्यान लगाया देवी माताने उनकी सहायता की ॥

मूल—फिर अंगद गुरते अमरदास रामदासै होई सहाइ ॥

अर्थ—गुरुनानक साहिव से पीछे गुरअंगद गुर अमरदास गुररामदास तीनो साहिवोंने अपने अपने समय में भगवती की उपासना की उनपर भी भगवती की दया हुई। देखो शुद्ध शब्द गुरु है यहां गुरलिखा है फारसी अक्षरों से नक़ल करने के कारण यहअशुद्धिहै फारसीमें जल्दी करके स्वरअक्षरों पर नहीं लिखते अव नवीन पंथी गुरका अर्थ भी कुछ और घड़ें यह भी भगउती की न्याई भिन्न शब्द है।

मूल—अरजन हरगोविंद नू सिमरो श्रीहरराय।

अर्थ—गुरअरजन गुरहरगोविंद गुरहरराय तीनोंने अपने अपने समय में भगवती का स्मरण कियाहै इस पदमें नू का अर्थ ने है या शायद पहिले ने लिखाहोवे किसी कारण नू वनगया होगा अथवा इस पदको पहले पद (फिर अंगदते गुर अमरदास रामदासै होई सहाय ) के साथ लगादो फिर नू का अर्थ

को होजावेगा अर्थात् गुर अंगद गुर अमरदास गुररामदास गुर अरजन गुरगोविंद नू भगवती सहायहोई।

(सिमरौ श्रीहरराय) यह पद जुदा रहेगा कोई कोई भाई जी इस पद का यह अर्थ भी करतेहैं कि गुर अरजन और गुर हरराय को स्मरण करना चाहिये यह अर्थ प्रसंग से विरुद्ध है क्योंकि इसमें देवी की उपमा है और की नहीं दूसरे यह वात भी है कि पहले पदों में यह लिखा है कि अमुक अमुक गुरू ने देवी का ध्यान किया यहां इन दोनों गुरुओं के वास्ते क्यों अैसा कहा पहले चार गुरुओं के ध्यान करने वास्ते क्यों न कहा वह इन से बडे थे अंत में 'लिखा है। सब थांई होय सहाइ' यह पद भी बतलाता है कि तमाम शब्द में भगवती की स्तुती है।

॥ मूल ॥ श्रीहरकृष्ण धिआईअै जिस डिठे सब दुखजाइ

अर्थ—गुर हरिकृष्ण ने भी भगवती का ध्यान किया है वह कैसे हैं जिन की विशाल मूर्त्ति के दरशन से आदमी के सब शोक दूरहोजाते हैं इस में उनकी सुंदरता को भी वर्णन किया है।

॥ मूल ॥ तेग बहादर सिमरीअै घर नउनिधिआवै धाइ।

अर्थ—गुर तेग बहादर ने भी भगवती का स्मरण किया

है वह कैसे हैं जिनके दरशन वा ध्यान से घर में दौलत दौडकर आती है ।

॥ मूल ॥ सबथांई होईसहाइ ।

अर्थ—भगवती सव गुरूओंपर तमाम स्थानों में सहायता करती रही है इसपद से स्पष्ट सिद्ध होता है कि केवल भगवती की स्तुती है प्रसाद या भेट के वक्त जो इसको पढते हैं इसका यही कारण है यह चीज भगवती के अर्पण हो चुकी और इस शब्द से गुरूगोविंदासिंह जी अपने सिखों को समझाते हैं कि मेरे सिंहो जिस तरां हम सव गुरूओंने भगवती की पूजा करके फलपाया है इसी तरां तुम पूजा करो फल मिलेगा और भगौती का अर्थ खंडा किसी जगह नहीं यह केवल कपोल कल्पना तुच्छ बुद्धियों की है। अलम्

श्रीयुत पंडित तिलकरामजी लूना निवासी
उपदेशक महामंडल भारतधर्म.

ओम् ।

# दयानंदी यजुर्वेद भाष्यका नमूना ।

पृष्ठ ३८० हेजगदीश्वरमेंऔर आप पढनेपढानेहारे दोनोंप्रीतिके साथवर्त्तकरविद्वान् धार्मिकहों कि जिससे दोनोंकी विद्याबृद्धि सदाहोवे इति, स्वामीजी के विचार में ईश्वर पूर्ण विद्वान् और धार्मिक नहीं है धन्य ! पृष्ठ ४४९ हेजगदीश्वर ! जिसकारण आप—सुख दुःखको सहन करने और करानेवाले हैं इति, दयानदजीने ईश्वरको सुख दुःखका भोगीभी मानलिया पृष्ठ ९०० हे शिष्य ! में तेरे जिससे मूत्रोत्सर्गादि कियेजाते हैं उस लिंगको पवित्र करता हूं तेरे जिससे रक्षाकी जाती है उस गुदेन्द्रियको पवित्र करता हूं इति, यह लेख सर्वथा मिथ्या और असमंजस है । पृष्ठ ६३९ ईश्वर कहता है कि हे (इन्द्र) सब सुखोंके धारण करनेहारे शूर) हम लोगोंको सवजगह से भय रहितकर इति । स्वामीजीकी बुद्धिने ईश्वर कोभी भयमान

करदिया पृष्ठ ६७५ गृहस्थजनों को चाहिये कि इसप्रकारका प्रयत्नकरें कि जिससे तीनों अर्थात् भूत भविष्यत् और वर्त्तमानकाल में अत्यंत सुखी हों इति। ऐसा कौन प्रयत्न है जिससै भूतकाल में सुखहो। पृष्ठ १३९६ जो स्त्री अविनाशी सुख देनेहारी इति मुक्ति सुखको तो विनाशीमान वैठे और स्त्री को अविनाशी सुख की देनेहारी स्वीकार किया धन्य ! पृष्ठ १४०८ हे पते। वा स्त्री तू ००० मेरे नाभिसै ऊपर को चलनेवाले प्राणवायु की रक्षाकर मेरे नाभिके नीचे गुह्येन्द्रिय मार्गसै निकलनेवाले अपानवायुकी रक्षाकर इत्यादि। यहलेख सर्वथा निरर्थक है पति वा स्त्री क्या रक्षाकरसकतेहैंपृष्ठ१६१८आम्रादि बृक्षोंको काटने के लिये वज्रादि शस्त्रों को ग्रहणकर इति, आम्रादि बृक्षोंके काटने की आज्ञादेना स्वमीजी की बुद्धिकानमूना है धर्मात्मा लोग तो आम्रादि के वागलगाते हैं और उनसे मनुष्य अतिसुखपाते हैं। अध्याय २१ पृष्ठ ७४ ( छागस्य ) वकरा आदि पशुओं के वीचसै लेने योग्य पदार्थ का चिकना भाग अर्थात् घी दूध आदि इति, वकरे का घी दूध सर्वथा असंभव है यदि कोई कहै कि स्वामिजीने वकरी लिखाहोगा यंत्रालय की भूलसे वकरा लिखागया तो अशुद्ध

है क्योंकि ( छागस्य ) पद की व्याख्या है जो कि बकरे ही का बाचक है बकरी का नहीं। अध्याय २१ पृष्ठ ८९ वट आदि बृक्षों के तृप्ति करानेवाले फलोंको प्राप्त हो इति क्या दयानंदी महाशय वटवृक्ष के फलोंको तृप्ति करानेवाले और उनकी प्राप्तिको उत्तम मानते हैं ? अध्याय २१ पृष्ठ १०९ सुंदर फलोंवाला पीपल आदि बृक्ष इति, पीपल के फलोंको सुंदर कहना दयानंदजी ही का काम है। अध्याय २१ पृष्ठ ११९ प्राण और अपान के लिये ( छागन )—छेरी आदि पशु से वाणी के लिये मेढासे परम ऐश्वर्य के लिये बैलसे भोग करै इति, ऐसे उपदेशों से वेदकी महिमा है वा निंदा ? अध्याय २८ पृष्ठ ११२ हे मनुष्यो जैसे बैल गौओं को गाभिन करके पशुओं को वढाता है वैसे गृहस्थ लोग स्त्रियों को गर्भवतीकर प्रजा को बढ़ावें इति इस लेख से गोत्रादि का विचार भी न रहा पशुवत् व्यवहार की आज्ञा दी धन्य? अध्याय २९ पृष्ठ ७०१ माता के तुल्य सुख देनेवाली पत्नीको प्राप्त हों इति क्या पत्नी भी माता के तुल्य सुख देने वाली होती है ?। अध्याय ३० पृष्ठ ७८३ हे परमेश्वर सांप आदि को उत्पन्न कीजिये इति ऐसा मूर्ख जगत् में कोई न होगा जो सांपों की उत्पत्ति के लिये परमेश्वर से प्रार्थना

करै यह स्वामी जी के वेद भाष्य का नमूना है सत्यार्थ प्रकाश सन् १८८४ के पृष्ठ ४६१ में लिखा है कि एक हंडे में चुडते चावलों में से एक चावल की परीक्षा करने से कच्चे वा पक्के हैं सब चावल विदित होजाते हैं ऐसेही इस थोडे से लेख से सज्जन लोग बहुत सी बातें समझलेंगे बुद्धि-मानों के सामने बहुत लिखना आवश्यक नहीं दयानन्दजी के खंडन में हमने प्रायः पुस्तक छपाये हैं सज्जन लोग उनको देखें और आप छपाकर प्रचार करें।

जगन्नाथदास मुरादाबाद

पुस्तक मिलने का पता—

श्रीयुत पं० तिलकराम जी

लूनानिवासी

उपदेशक महामंडल भारतधर्म